अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2025

जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति का एक अध्ययन

डॉ. सुशील दत

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय गुरावडा (रेवाडी)

सारांश

जयप्रकाश नारायण बीसवीं सदी के भारतीय नेताओं में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। व्यक्तित्व व कृतित्व दोनों ही दृष्टियों से अद्वितीय हैं। स्वतंत्रता संग्राम में एक कार्यकर्ता व मार्ग निर्देशक के रूप में उनकी भूमिका वीरता व शौर्य की प्रतिमूर्ति है। स्वतंत्रता के पश्चात् वे लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता व भ्रातृत्व की भावनाओं एवं धर्मनिरपेक्षता को संरक्षक थे। भारत की स्वतंत्रता से पहले भारत देश की मिट्टी में क्रांतियों के बीजारोपण किये गये और वे क्रांतियाँ रक्तरंजित भी रहीं परन्तु कुछ विचारकों ने क्रांतियाँ तो की परन्तु उन क्रांतियों में रक्त की एक बूँद भी इस धरा पर नहीं गिरी, उन्हीं विचारकों में से एक थे जय प्रकाश नारायण। जय प्रकाश नारायण जी ने बिहार राज्य में एक ऐसी क्रांति का सूत्रपात किया जिस क्रांति से सम्पूर्ण भारत में एक नया दौर आरम्भ हो गया। उन्होंने शैक्षिक, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक या आध्यात्मिक, वैचारिक और सांस्कृतिक क्रांति का बिगुल बजाया। उन्होंने कहा कि पूरे देश में ये सात क्रांतियाँ अवश्य होनी चाहिए ताकि भारतीय समाज में आमूलचूल परिवर्तन हो सके। भारत की रूढिवादिता में परिवर्तन हो कर भारत एक सकारात्मक दिशा की ओर बढ़ सके। पाश्चात्य दार्शनिक अरस्तु, रूसो, हॉब्स, मार्क्स आदि ने भी क्रांतियों की बात की तथा देश की व्यस्थाओं में परिवर्तन लाने के लिए लोगों को हिंसात्मक क्रांति की ओर प्रेरित किया परन्तु जयप्रकाश नारायण जी ने हिंसात्मक क्रांति के स्थान पर अंहिसात्मक क्रांतियों पर अपने विचार दिये। जयप्रकाश नारायण जी पर महात्मा गाँधी, विनोबा भावे का अत्यधिक प्रभाव था। इस शोध पत्र के अध्ययन का उद्देश्य जय नारायण प्रकाश जी के क्रांति सम्बंधी विचारों का अध्ययन करना है।

सार शब्द: स्वतंत्रता, क्रांति, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, संस्कृति।

प्रस्तावना

आधुनिक भारत के महान विचारक लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी सच्चे समाजवादी नेता होने के साथ-साथ एक मानवतावादी भी थे। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गाँधी जी के साथ मिलकर संघर्ष किया। जयप्रकाश नारायण का जन्म 11 अक्टूबर 1902 को बिहार के सारण जिले में हुआ था। जयप्रकाश जी बचपन से ही मेधावी छात्र थे। उन्होंने भारत में शिक्षा ग्रहण की तथा उसके पश्चात् अमेरिका की बर्कले विश्वविद्यालय से भी शिक्षा ग्रहण की। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् वे भारत में आ गए। भारत में आने के पश्चात् भारत माता की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के कारण उनको जेल भी जाना पड़ा। अन्ततः 15 अगस्त 1997 भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उनको ऑल इंडिया रेलवे फेडरेशन का अध्यक्ष भी बनाया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ वर्षों बाद ही जयप्रकाश नारायण जी को लगने लगा कि भारत के अधिकतर नेतागण भाई भतीजावाद भ्रष्टाचार आदि में लिप्त होने लगे थे। नेतागण जनता की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दे रहे थे। वे केवल राजनीति को धन इकट्ठा करने का साधन समझने लगे थे। लोकतंत्र को लूटतंत्र में परिवर्तित करने के लिए तत्पर हो रहे हैं।

1974 में पटना के गांधी मैदान में लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति का नारा दिया। जयप्रकाश नारायण ने कहा था कि आजादी के 27 सालों बाद भी भारत देश के लोग भूखमरी, कीमतों में वृद्धि, भ्रष्टाचार और अन्याय का सामना कर रहे हैं, हम केवल संपूर्ण क्रांति चाहते हैं, उससे कम कुछ भी नहीं।

जयप्रकाश नारायण जी का मानना था कि नेता जनता के सेवक हैं, न की जनता के मालिक। जयप्रकाश नारायण जी ने इस बात को ध्यान में रखकर "जनप्रतिनिधियों को वापिस बुलाने" का अधिकार जनता को देने की बात कही, यदि कोई प्रतिनिधि जनता की समस्याओं का समाधान नहीं करता है तो ऐसे प्रतिनिधियों को लोगों को वापिस बुला लेना चाहिए, यही वास्तव में सच्चा लोकतंत्र होगा। वे स्वयं को किसी दलगत राजनीति में बाँधने के इच्छुक नहीं थे अपितु वे तो दलविहीन लोकतंत्र का समर्थन करते थे।

जयप्रकाश नारायण जी समाज की व्यवस्थाओं से दुःखी होकर संपूर्ण क्रांति या समग्र क्रांति की आवश्यकता पर बल देते थे। वे केवल जनता को वोट देने वाली व्यवस्था का ही एक पुर्जा मात्र नहीं मानते थे बल्कि वे कहते थे कि समाज के लोगों की आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन करने के लिए केवल सरकार पर ही निर्भर नहीं रहना है अपितु जनता को स्वयं जन आंदोलन करके व्यवस्थाओं में परिवर्तन करना होगा । समाज की व्यवस्थाओं में परिवर्तन करने के लिए जन आंदोलन में जनता को अत्यधिक सहभागिता करनी होगी। जयप्रकाश नारायण जी का मत था कि समाज में बदलाव स्वयं समाज ही ला सकता है, सता नहीं। संपूर्ण क्रांति में जनता की सहभागिता नितान्त आवश्यक है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2025

जयप्रकाश नारायण जी ने संपूर्ण क्रांति के सात प्रकार बतायें जो कि इस प्रकार हैं:-

शैक्षिक क्रांति

जयप्रकाश नारायण जी शिक्षा को सभी व्यवस्थाओं में सुधार करने का एक मात्र मार्ग बताते थे। उनका मत था कि ब्रिटिश राज में अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था को बढ़ावा दिया गया। अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था ने भारत में भारतीय संस्कृति व नैतिकता को ही समाप्त करने का कार्य किया है। इस अंग्रेजी के कारण ही नैतिकता व आध्यात्मिकता समाप्त होने की कगार पर आ गई है। प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता है। शिक्षा नैतिकता से परिपूर्ण होनी चाहिए। शिक्षा समाज के सभी वर्गों, गाँव उपेक्षित व निर्धन वर्गों को प्राप्त होनी चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो कि युवाओं को रोजगार प्रदान कर सके व उनको आत्मनिर्भर बना सके। पाठ्यक्रम का निर्माण समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप करना चाहिए। पाठ्यक्रम व शिक्षा श्रम से सम्बंधित होना चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें श्रम का समावेश हो । यदि श्रम का समावेश नहीं होगा तो उच्च डिग्री धारक श्रम करने से मन चुराएंगे। गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा का समर्थन किया जिसको जयप्रकाश नारायण जी ने उचित बताया।

जयप्रकाश नारायण जी के अनुसार शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। विश्वविद्यालय व महाविद्यालय केवल डिग्री देने वाले संस्थान नहीं होने चाहिएँ अपितु ये संस्थान छात्र-छात्राओं को जीवन में आत्मनिर्भरता का गुण देने वाले होने चाहिएँ। शिक्षा में व्यावसायिकता का गुण होना चाहिए ताकि विद्यार्थी डिग्री लेकर भी नौकरियों के पीछे ना भटकें। विश्वविद्यालय को पठन-पाठन, शोध व राष्ट्र निर्माण करने वाले होने चाहिएं। जयप्रकाश नारायण जी सभी को उच्च शिक्षा देने को उचित नहीं मानते थे अपितु उनका मत था कि उच्च शिक्षा बौद्धिक दृष्टि से सम्पन्न व्यक्तियों को ही देनी चाहिए ताकि समाज में आपसी भाईचारे की भावना का विकास हो सके ।

सांस्कृतिक क्रांति

जयप्रकाश नारायण जी सांस्कृतिक क्रांति के पक्षकार थे। उनका मत था कि सांस्कृतिक क्रांति ही नैतिक क्रांति है। समाज के बाहय ढाँचे में परिवर्तन करने से व्यवस्थाओं में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होगा ? जब तक कि मनुष्यों द्वारा अपने नैतिक मूल्यों में परिवर्तन नहीं किया जाएगा तब तक समाज आदर्शात्मक व्यवस्था
धारणा नहीं कर सकेगा।

जयप्रकाश नारायण जी धर्म की महता पर प्रकाश डालते हुए "स्वधर्म" को महत्वपूर्ण बताते थे। उनके अनुसार स्वधर्म से आशय हिंदू-मुस्लिम या अन्य धर्मों से नहीं है। स्वधर्म से नारायण जी का आशय मनुष्यों द्वारा अपने सभी दायित्वों व कर्तव्यों को बिना किसी स्वार्थभाव से करना है। सभी मनुष्यों को राष्ट्र के प्रति राष्ट्र भावना से कार्य करना व राष्ट्र के लिए अपने जीवन के बलिदान के लिए भी तत्पर रहना ही स्वधर्म है।

आर्थिक क्रांति

मानव जीवन हेतु धन की आवश्यकता होती है बिना धन के मानव जीवन सम्भव नहीं है। धन ही धर्म का मूल है। धन मनुष्य की आवश्यकता है परन्तु धन लालसा नहीं होना चाहिए। जीवन को सुखमय रीति से चलाने के लिए धन से ही आवश्यक वस्तुओं को खरीद सकते हैं। धन जब मनुष्य की लालसा बन जाती है, तब मनुष्य धन को अर्जित करने के लिए अन्य मनुष्यो, प्राकृतिक संसाधनों व पशु जगत् का शोषण करने लग जाता है।

पूँजीवादी व्यवस्था में पूँजीपतियों द्वारा श्रमिकों का शोषण किया जाता है। श्रमिक मजबूरीवश अपना श्रम पूँजीपतियों को बेचते हैं। पूँजीपति उनकी मजबूरी का लाभ उठाकर उनका शोषण करते हैं जिसके कारण श्रमिकों में जो प्रतिभाएँ छिपी होती हैं, धन के अभाव के कारण उन प्रतिभाओं का विकास नहीं हो पाता जिसके कारण वे निर्धनता के जाल में फँसते चले जाते हैं। जयप्रकाश नारायण पूँजिपतियों के विरोधी नहीं थे अपितु उनका मत था कि बडे उद्योगों पर केंद्र सरकार व राज्य सरकारों का स्वामित्व होना चाहिए तथा छोटे उद्योग-धंधों पर समितियों का स्वामित्व होना चाहिए। वे उद्योग धंधों पर केंद्रीयकरण के समर्थक नहीं थे अपितु वे तो उद्योग-धंधो पर विकेंद्रीकरण के समर्थक थे। सम्पति के विकेंद्रीकरण के पक्षधर थे ताकि किसी व्यक्ति का शोषण न हो सके।

सामाजिक क्रांति

जयप्रकाश नारायण जी की सामाजिक क्रांति का आशय समाज में किसी प्रकार की हिंसात्मक क्रांति से नहीं था अपितु वे तो ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें किसी भी प्रकार की सामाजिक तथा आर्थिक असमानताऐं न हों। समाज में कोई भी व्यक्ति आवश्यकता से अधिक धन एकत्रित न करें क्योंकि वह व्यक्ति उस धन का एकमेव स्वामी नहीं होता। नारायण जी का मत था कि धन मनुष्यों द्वारा समाज में से ही अर्जित किया जाता है। जयप्रकाश नारायण जी तो पूर्ण रूप से संपति की असमानता को समाप्त करना चाहते थे, वे तो संपत्ति को ही असमानता का मूल कारण मानते थे। उनके अनुसार समाज में से व्यक्तिगत सम्पत्ति को समाप्त कर देना चाहिए।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2025

नारायण जी का कहना था कि भारतीय समाज में मानसिक श्रम को अधिक महत्व प्रदान किया गया है जबकि शारीरिक श्रम को भी महत्व प्रदान करना चाहिए था। सभी व्यक्तियों को मानसिक श्रम के साथ शारीरिक श्रम भी करना चाहिए। शारीरिक श्रम से छुट केवल विकलांग व्यक्तियों को ही देनी चाहिए।

जयप्रकाश नारायण जी सर्वोदय की बात करते थे। वे कहते थे कि कि समाज में सभी व्यक्तियों का विकास होना चाहिए। विकास के मामले में किसी भी व्यक्ति से जात-पात, धर्म, रंग रूप या अन्य किसी भी प्रकार से भेदभाव नहीं होना चाहिए तभी सच्चे अर्थों में सामाजिक समानता स्थापित होगी ।

राजनीतिक क्रांति

जयप्रकाश नारायण जी ने सम्पूर्ण क्रांति में राजनीतिक क्रांति के बारे में भी बताया। उनका कहना था कि राजनीति का अर्थ सता से नहीं है अपित वे तो सत्ता विकेंद्रीकरण की बात करते थे। सता यदि केन्द्रीकृत रूप में होगी तो भ्रष्टाचार का ही उद्भव होगा जो राज्य की जनता के लिए खतरनाक होगा। केन्द्रीकृत सरकार लोगों के सारे अधिकार छीन लेती है। लोगों का जीवन पशुतुल्य हो जाता है। लोगों को राजनीतिक शिक्षा से वंचित कर दिया जाता है और लोगों के राजनीतिक अधिकार शून्य हो जाते हैं। लोकतांत्रिक संस्थाओं का पतन हो जाता है। जयप्रकाश नारायण जी तो दल विहीन लोकतंत्र की बात करते थे। नारायण जी तो राज्य व दलों की महता को कम मानते थे, उनका कहना था कि राज्य को कम से कम अधिकार प्रदान किये जाने चाहिऐं। राज्य में न्याय, भ्रातृत्व, समानता, स्वतंत्रता आधारित राजनीतिक प्रणाली की स्थापना की बात करते थे।

बौद्धिक क्रांति

जयप्रकाश नारायण जी शिक्षा को समाज को जागृत करने का एक मात्र साधन मानते थे। उनका मत था शिक्षा से ही समाज की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन सम्भव है। उनका मत था कि भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है, अनैतिकता में वृद्धि हो रही है। धन कमाने के लिए लोग अनैतिक साधनों को अपना रहे हैं। लोगों को मानसिक रूप से सबल बनना पड़ेगा तथा अनैतिक चीजों से अपने आपको तथा इस समाज को बचाना पड़ेगा। हर व्यक्ति में चेतना को जागृत करना पड़ेगा जिससे वे उन पर होने वाले अत्याचारों क शोषण का विरोध कर सकें तथा अपने अधिकारों के लिए किये लड़ सकें।

आध्यात्मिक क्रांति

जयप्रकाश नारायण जी ने अपनी संपूर्ण क्रांति में आध्यात्मिक क्रांति के बारे में बताया। वे मनुष्यों के मन में परिवर्तन करने की बात करते थे लेकिन यह परिवर्तन केवल जन आंदोलन से ही सम्भव है। मन के परिवर्तन का कार्य सरल नहीं है, यह एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है। जयप्रकाश नारायण जी भौतिकतावाद का समर्थन करते थे परन्तु उनका यह आशय नहीं था कि मनुष्य रोटी, कपड़े और मकान के कारण अपनी आध्यात्मिकता को ही नष्ट कर दे। रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की अपनी आधारभूत आवश्यकताऐं होती हैं, इनके बिना मनुष्य का जीवन सम्भव नहीं है।

निष्कर्ष

साधारण व्यक्तियों के लिए भौतिक आवश्यकताएँ ही उनका आध्यात्मिक जीवन होती हैं। जयप्रकाश नारायण जी का मत था कि मनुष्य में सहनशीलता व धैर्य का होना अति आवश्यकत है। आवश्यकता से अधिक धन संचय को जयप्रकाश नारायण जी उचित नहीं मानते थे। आवश्यकता से अधिक धन संचय मनुष्य को लालची बना देता है तथा मनुष्यों को आध्यात्मिकता से दूर कर देता है। नारायण निरन्तर यह कहते रहते थे कि सम्पूर्ण क्रांति निरन्तर क्रांति है, सतत् चलने वाली क्रांति कभी शुरू हुई, कभी खत्म हुई ऐसा नहीं होगा। घर-घर में क्रांति, व्यापक क्रांति यही नारायण की सम्पूर्ण क्रांति की कल्पना थी। यह एक अखण्ड धारा, प्रवाह है। नारायण की कल्पना सतत् क्रांति कि है सम्पूर्ण क्रांति सतत् चलेगी, निरन्तर चलेगी तथा सामाजिक जीवन को बदलती चलेगी। इस क्रांति में कोई विराम नहीं है। पूर्ण विराम तो हरगिज नहीं है परिस्थिति के अनुसार उसके रूप बदलेगें, प्रक्रियाएँ बदलेगी वक्त आने पर शक्तियों का ऐसा उभार होगा जो परिवर्तन के रथ को धक्का मारकर आगे बढ़ा देगा। नारायण ने कहा कि सम्पूर्ण क्रांति के सिपाही को संघर्ष चलाना होगा, जूझना होगा और साथ-साथ रचनात्मक एवं सृजनात्मक काम करने होगें। संघर्ष और रचना की दोहरी प्रक्रिया सम्पूर्ण क्रांति को फलीभूत करने के लिए आवश्यक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आचार्य राममूर्ति, जयप्रकाश जी की विरासत, (वाराणसी, 1999)।
2. जयप्रकाश नारायण, कारावास की कहानी, (वाराणसी,1999)।
3. जयप्रकाश नारायण ,समाजवाद से सर्वोदय की ओर, (वाराणसी, 1993) ।
4. जयप्रकाश नारायण, भारतीय राज्य-व्यवस्था की पुनर्रचना का एक सुझाव।

ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2025

5. सुजाता प्रसाद, बिमल प्रसाद, द ड्रीम ऑफ रेवोल्युशन: ए बायोग्राफी ऑफ जयप्रकाश नारायण, पेंगुईन रैंडम हाउस इंडिया।
6. https://byjus.com/free-ias-prep/jayaprakash-narayan/
7. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Jayaprakash_Narayan
8. http://www.loksatta.org/about-drjayaprakash-narayan